जातिवादः क्षेत्रीय दलों का हथियार

जातिवाद को क्षेत्रीय दलों द्वारा हथियार के रूप में प्रयोग कई कारणों से किया जाता हैं जैसे-

➢ जाति का राजनीतिकरण अर्थात एक विशेष जाति का किसी दल विशेष से जुड़ना। जातिगत चेतना बढ़ने पर यह स्थिति उत्पन्न होती है। जैसेः-

- कायस्थ महासभा
- राजपुत महासभा
- करणी सेना
- महाराष्ट - मराठी

महाराष्ट्र - मराठी
हरियाणा - जाट

➢ **जातिगत सम्मलेन** - कई बार जातिगत सम्मेलन किया जाता है। जैसे- जाट का वोट जाट को, यादव जाति, कुर्मी जाति, पाटीदार, ब्राह्मण, कम्मा जैसी जातियों का किसी दल विशेष से जुड़ा होना

- राजस्थान में जाट
- गुजरात में बनिया - ब्राह्मण, पाटीदार
- आंधप्रदेश में कम्मा, रेड्डी
- केरल में एझवा, नायर

➢ जाति, राजनीति में दोनों रूप देखने को मिलता है यद्यपि इसपर अनेक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे केन्द्रीय चुनाव में जाति की भूमिका कम (अभी बढ़ी हैं।) जबकि राज्यों एवं स्थानीय चुनाव में जाति की भूमिका अधिक प्रबल होती है।

➢ नौजवानों की बढ़ती संख्या जो मुख्य रूप में विकास से जुडे होते है, के द्वारा भी इसमें अनेक सुझाव दिये गये हैं।

इसप्रकार के प्रयासों के बावजूद भारतीय चुनाव प्रणाली के साथ अनेक चुनौतियाँ है

❖ जाति, धर्म का वोट प्राप्त करने के लिए उपयोग
❖ राजनीति का अपराधिकरण
❖ केन्द्र एवं राज्य स्तर पर बार-बार चुनाव
❖ मिली-जुली सरकारों की चुनौती
❖ धनबल व बाहुबल का बढता उपयोग
❖ आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन

इन मुद्दों के कारण राजनीति में जाति का उपयोग गंभीर मुद्दा है। भारतीय समाज जाति आधारित है। यह विभिन्न विशेषताओं पर आधारित है। जैसे

- जन्म के आधार पर
- जन्मजात पेशा के आधार पर
- अन्तः जातिय विवाह के आधार पर
- खान-पान के आधार पर

इस विशेषताओं के कारण जाति एक मजबूत संगठन है, जिनका सदियों से सता प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता हैं।

जाति का राजनीति से संबंधों को दो भागो मे बाँटा जा सकता है:.

1. राजनीति का जातिकरण
2. जाति का राजनीतिकरण

राजनीति का जातिकरण:

इसका तात्पर्य है कि राजनीतिक उद्देश्यों के लिए जाति का उपयोग होता है

(1) दलों का जाति पर आधारित होना

जैसे-

- यादव (RJD)]
- पासवान (लोजपा)
- कुशवाहा (RLSP),
- दलित (बसपा),
- वोकालिग्गा (JDS) कर्नाटक, रेड्डी (YSRCP)

(2) चुनाव में मुद्दो की भूमिका

जैसेः- राष्ट्रीय मुद्दों के प्रबल होने से जाति की भूमिका का कम होना

(3) नेता एव उम्मीदवार की विकासात्मक भूमिका
(4) सोशल मीडिया एवे मोस मीडिया की भूमिका
(5) पिछले वर्षों में किये गये चुनाव सुधार आदर्श आचार संहिता

बिहार परिदृश्य

बिहार जैसे राज्य राजनीतिक रूप से जागरूक राज्य हैं। यहाँ परंपरागत समाज होने के कारण जाति की भूमिका भी ज्यादा है।

बिहार के राजनीति में जाति की भूमिका को दो भागों में बाँटा जा सकता हैं-

- **1990 के पूर्व** कांग्रेस के वर्चस्व का समय, यद्यपि 1980 के दशक में कर्पूरी ठाकुर के द्वारा अपने राजनीतिक अधिकार को व्यापक करने के लिए जाति का उपयोग किया गया। इस दौर में कांग्रेस पाटी द्वारा सोशल इंजीनियरिंग का उपयोग किया गया। अगड़ो के नेतृत्व में पिछड़ो को अपने साथ जोड़कर रखना। अधि कांश मुख्यमंत्री उच्च जाति के होते थे।
- **1990 के बाद** मेडल कमीशन के रिपोर्ट लागू होने के बाद बिहार में मंडलवादी राजनीति की शुरुआत हुई। इसे पिछडे तथा दलित समाज के उत्थान के चरण के रूप में जाता जाता है। कांग्रेस पार्टी का हाशिए पर जाना इसकी मुख्य विशेषता रही है।

इस चरण के प्रमुख दल एवं नेताओं में-

- RJD - लालू प्रसाद यादव - मुस्लिम, यादव
- JDU - नीतिश कुमार EBC + upper Caste + महिलाएँ
- BJP - सुशील मोदी - दलित + उच्च जाति
- लोजपा - रामविलास पासवान दलित + पासवान जाति
- राष्ट्र लोक समता पाटी (RLSP) उपेन्द्र कुशवाहा - कुशवाह जाति
- जनाधिकार पार्टी (JAP)- पप्पु यादव -यादव जाति
- हिन्दुस्तान आवामी मोर्चा (HAM) -महादलित -जीतनराम मांझी -मांझी

इस प्रकार दल एवम् नेता जो बिहार की राजनीति से संबंधित है मुख्य रूप से पिछडे एवं दलित समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। नये बदलावों में राज्य में अगड़ी जातियों एवं महिलाओं को राजनीति में बल मिला है। जो बहुमत का आधार है। इस स्थिति के अनेक सकारात्मक पक्ष है। जैसे:

1. जाति का दबाव समूह के रूप में कार्य तथा अनेक निर्णयों को अपने पक्ष में करना।
2. राजनीतिक सशक्तिकरण के कारण सार्वजनिक जीवन में भागीदारी का बढ़ना और इस प्रकार सशक्तिकरण का होना।
3. प्रस्तावना में वर्णित समानता एवं न्याय के सिद्धांतों को मजबूती प्राप्त होना।
4. जातिगत भेदभाव का कमजोर होना। 5. लोकतांत्रिक व्यवस्था मे जनभागीदारी का बढ़ना।
6. क्षेत्रीय दलों की केन्द्रीय राजनीति में भागीदारी का बढ़ना।

इस प्रक्रिया की सीमाएँ

- ❖ लोकतंत्र एवं शासन के लिए नाकारात्मक
- ❖ राजनीति के अपराधीकरण को बढ़ावा
- ❖ सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार का बढ़ना
- ❖ राजनीतिक सशक्तीकरण के कारण अनेक जातियो का प्रभुत्व जाति के रूप में उभरना तथा इनके द्वारा स्थानीय स्तर पर अन्य जातियों के अधिकारों की अनदेखी करना।
- ❖ प्रशासन का जातिकरण, इस प्रकार योग्यता की अनदेखी

इन सीमाओं को देखते हुए सैधांतिक रूप से आदर्श आचार संहिता के तहत जाति का राजनीतिक उद्देश्यों के उपयोग को भष्ट आचरण माना गया है। इसमें दोषी पाये जाने की स्थिती में चुने गए सदस्य की सदस्यता रद्द की जा सकती है।

अंततः लोकतंत्र की मजबूती के लिए राजनीति एवं चुनाव का विकासात्मक मुद्दों पर आधारित होना आदर्श हैं तथा जाति के उपयोग को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR